RISING UP FROM DROUGHT TOGETHER
DESERTIFICATION & DROUGHT DAY
17 JUNE 2022

विश्व मरूप्रसार एवं सुखा रोकथाम दिवस - 17 जून 2022

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा विश्व मरूप्रसार एवं सुखा रोकथाम दिवस 17 जून 2022 को आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत उत्साह के साथ मनाया गया | इस अवसर पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक माननीय श्री अरुण सिंह रावत, आई.एफ.एस. मुख्य अतिथि एवं श्री हनुमान राम, मुख्य वन संरक्षक(वन्य जीव) रहे | यह कार्यक्रम श्री एम.आर. बालोच, आई.एफ.एस., निदेशक आफरी, जोधपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ | मुख्य कार्यक्रम से पूर्व महानिदेशक एवं अन्य अतिथियों ने संस्थान परिसर में पौधरोपण किया तथा किसान मेला स्थल का उद्घाटन किया।

मुख्य कार्यक्रम आफरी के सभागार में संचालित हुआ | निदेशक श्री एम.आर. बालोच द्वारा मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का राजस्थानी परंपरा अनुसार साफ़ा पहनाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया | कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से की गयी | श्री एम.आर. बालोच द्वारा सभी अतिथियों का परिचय देते हुए स्वागत किया गया | कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण में विशिष्ट योगदान प्रदान करने वाले पर्यावरणविद् अतिथि श्री उमाराम चौधरी, सेवानिवृत मुख्य वन संरक्षक, श्री भोपाल सिह झालाड़ा तथा सुमेर सिंह भाटी सांवता जैसलमेर, जाडन आश्रम के फूलपुरी महाराज, श्रीमती विमला सियाग, श्री रामजी व्यास, श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी, श्री प्रदीप शर्मा, वन विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील किसान/महिला किसान भी उपस्थित थे |

आफरी निदेशक एम. आर. बालोच भा.व.से. ने अपने स्वागत भाषण में मरुस्थलीकरण का अर्थ बताते हुए कहा कि विगत कुछ वर्षों से रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक

प्रयोग, चारागाह विनाश, प्रदूषण के कारण भूमि की उपजाऊ क्षमता कम हुई है तथा इस हेतु वनीकरण के साथ जन जागृति लाने की जरूरत है। उन्होने विश्व मरु प्रसार रोकने हेतु किए जा रहे प्रयासों के तहत आफरी द्वारा तैयार लूणी डी.पी.आर. एवं शीशम के उन्नत क्लोन्स रिलीज सहित अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री हनुमान राम, मुख्य वन संरक्षक, वन्य जीव, राजस्थान वन विभाग ने मरू प्रदेश की विकट परिस्थितियों में वन एवं वन्य जीव संरक्षण हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए मरुस्थलीकरण के प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि कुछ वर्षों पूर्व पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर क्षेत्रों में आधींयों के कारण आस-पास के खेत एवं जमीन बालू मिट्टी से ढक जाती थी, लेकिन इंदिरा गांधी नहर परियोजना एवं वन विभाग के टिब्बा स्थिरिकरण कार्यों के बाद के बाद इस समस्या से निजात मिली है मृदा अपरदन कमी आई है | उन्होंने *Acacia tortilis* की महत्ता बताते हुए उपस्थित जनों से अधिक से अधिक पेड़ लगाने का अनुरोध किया |

इस अवसर पर डॉ. तरुण कान्त, समूह समन्वयक (शोध) ने "Combating Desertification: Overview, Interventions and future outlook" विषय पर पावर पॉइंट प्रस्तुकरण के माध्यम से मरुस्थलीकरण का परिचय, प्रकार, कारण एवं निवारण संबंधित रोचक एवं ज्ञानवर्धक विभिन्न पहलुओं को साझा किया | समूह समन्वयक (शोध) ने LDN (Land Degradation Neutrality) के बारे में बताते हुए आई.सी.एफ.आर.ई. की नदियों पुनरुधार, टिब्बा स्थरीकरण, जल संग्रहण, कृषि वानिकी, अवक्रमित पहाड़ियों के पुनर्वास, शेल्टर बेल्ट पौधारोपण, विंड ब्रेक आदि गतिविधियों की महत्ता बताई |

कार्यक्रम में आफरी द्वारा शोध प्रक्रियाओं से उत्पन्न किये गये शीशम के उन्नत क्लोन पर एक पैम्पलेट जारी किया गया तथा उपस्थित किसानों को इस उन्नत क्लोन्स के पौधों तथा नीम पत्ती खाद के पैकेट वितरित किए गए। इस कार्य से जुड़े लोगों कों प्रशस्ति-पत्र भी देकर सम्मानित किया |

कार्यक्रम के अगले चरण में आमंत्रित किसानों तथा एन.जी.ओ. श्री प्रसन्नपुरी गोस्वामी, श्री रामजी व्यास, श्रीमती विमला सियाग, श्री प्रदीप शर्मा, श्री उमाराम चौधरी, सेवानिवृत मुख्य वन संरक्षक, श्री दुर्गाराम पटेल, प्रगतिशील कृषक, जाडन आश्रम के श्री फूलपुरी महाराज सहित ने अपने विचार व्यक्त किए।

जैसलमेर में ओरण बचाओं संरक्षण के पर्यावरणविद् श्री भोपाल सिह झालाड़ा तथा श्री सुमेर सिंह भाटी सांवता जैसलमेर को जैसलमेरी पट्टू ओढ़कर प्रशंसा-पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

श्री उमाराम चौधरी, श्री प्रदीप शर्मा एवं श्री भोपाल सिह झालाड़ा ने पर्यावरण संरक्षण पर गीत एवं कविता प्रस्तुत करी| श्री भोपाल सिह झालाड़ा ने मुख्य अतिथियों को अपनी ओरण सम्बंधित कविता की प्रति भेंट करी |

कार्यक्रम की अगली कड़ी में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक माननीय श्री अरुण सिंह रावत, आई.एफ.एस. मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि, प्राकृतिक संसाधनों का सीमित एवं उचित मात्रा में उपयोग कर पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित एवं संवर्धित किया जा सकता है। इस हेतु सरकारी अथवा गैरसरकारी नही वरन् हर स्तर पर प्रयास करने की सतत् आवश्यकता है | श्री अरूण सिंह रावत ने मरु क्षेत्र में पादपों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जल-मृदा संरक्षण के साथ-साथ यहाँ के ओरण गोचर संरक्षण की आवश्यकता बताते हुए इस हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कार्य करने की जरूरत बताई। उन्होने किसानो की आय बढ़ाने एवं शुष्क क्षेत्रों में हरियाली के साथ-साथ सफल तकनीकों को आमजन तक पहुचाने की जरूरत भी बताई। कार्यक्रम के अंतिम चरण में

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को संस्थान निदेशक द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किये गये| कार्यक्रम का संचालन डॉ. संगीता सिंह, वैज्ञानिक "ई" ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. तरूणकांत, समूह समन्वयक (शोध) ने किया। कार्यक्रम में आफरी के वैज्ञानिकों, अधिकारीयों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, वन विभाग के अधिकारियो एवं किसानों ने भाग लिया।

प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयो
पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित करें :

विश्व मरु प्रसार रोक दिवस पर आफरी में अतिथियों ने पौधे

सिटी रिपोर्टर | जोधपुर

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) में विश्व मरु प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक अरुणसिंह रावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का सीमित व उचित मात्रा में उपयोग कर पारिस्थितिकी तंत्र

आफरी निदेशक एम
ने स्वागत भाषण
समन्वयक (शोध) ड
ने आफरी द्वारा किए गए
के बारे में बताया।
शीशम के उन्नत क्लोन
जारी किया। पर्यावरण
सिंह झालाड़ा तथा सु
को सम्मानित किया ग
गोस्वामी, रामजी व्या
मिश्रा, प्रदीप शर्मा, उम

आफरी में मरु प्रसार
दिवस पर कार्यक्रम आ

जोधपुर , (कासं)। प्राकृतिक संसाधनों का सीमित एवं उचित मात्रा में उपयोग कर पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित एवं संबर्धित किया जा सकता है। इस केलिए सरकारी अथवा गैरसरकारी नहीं वरन् हर स्तर पर प्रयास करने की सतत् आवश्यकता है, यह उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) में आयोजित विश्व मरु प्रसार रोक दिवस कार्यक्रम में भारतीय वानिकी अनुसंधान एंव शिक्षा परिषद् के महानिदेशक अरूण सिंह रावत भा.व.से. ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में व्यक्त किए। अरूण सिंह रावत ने मरु क्षैत्र में पादपों के संरक्षण एंव संवर्धन केलिए जल-मृदा संरक्षण के साथ-साथ यहॉं के ओरण गोचर को भी सुरक्षित रखने की आवश्यकता बताते हुऍं इस केलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कार्य करने की जरूरत बताई। उन्होने किसानो की आप बढाने एवं क्षैत्रों में हरियाली के साथ-साथ सफल तकनीकों को आमजन तक पहुँचाने की जरूरत भी बताई।

वन एवं वन्य जीव

जानकारी देते हुऍं मरुस्थलीकरण के प्रभावों के बारे में बताया।

आफरी के शोध प्रयासों की जानकारी दी

आफरी निदेशक एम. आर. बालोच भा.व.से. ने अपने स्वागत भाषण में मरुस्थलीकरण का अर्थ बताते हुऍं कहॉं कि विगत कुछ वर्षो में भूमि की उपजाऊ क्षमता कम हुई है तथा इस लिए रसायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करने, चारागाह विनास, वनीकरण के साथ जन जागृति लाने की जरूरत है। उन्होंने विश्व मरु प्रसार रोकने के लिए किए जा रहे प्रयासों को बताया।

बालोच ने लूणी डी.पी.आर. एवं शीशम के उन्नत क्लोन्स सहित अनेक जानकारियां बताई। आफरी के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. तरूणकांत ने मरु प्रसार रोक दिवस पर अपने उद्बोधन में इसके प्रभावों तथा आफरी द्वारा किए गए शोध प्रयासों के बारे में विस्तृत

किए गए। इ
प्रशस्ति-पत्र

भोपाल
तथा
भाटी
सम्म

जैसलमे
संग्रहण के
झालाडा तथ
जैसलमेर क
देकर पुरुस्कृ
कार्यक्र
स्वयसेवी सं
प्रसन्नपुरी ग
विमला सि
अतिरिक्त से
उमाराम चौध
डॉ. टी. एस.
फूलपुरी
गणमान्य अ
व्यक्त किए।
इससे प